जून , 2024 , वर्ष : 45 अंक : 06 www.indiatibet.net

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका

तिब्बत देश

तिब्बतियों को दृढ़ समर्थन के लिए स्पीकर एमेरिटा नैन्सी पेलोसी के प्रति आभार प्रकट के रूप में उन्हें श्वेत तारा का थांगका भेंट करते सिक्योंग पेन्पा शेरिंग। फोटो तेनजिन फेंडे सीटीए

मूल्य :10 रू , वार्षिक : 100 रू

जून , 2024 , वर्ष : 45 अंक : 06

तिब्बत देश

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका पहली बार 1979 में प्रकाशित तिब्बत के बारे में सही जानकारी के साथ हर महीने आपके हाथो में

लोकतंत्र सेवा पदक ग्रहण करने के बाद सभा को संबोधित करते सिक्योंग पेन्पा शेरिंग।

प्रधान संपादक
ताशी देकि

सलाहकार संपादक
प्रो. श्यामनाथ मिश्र , डा. अतुल कुमार

प्रबंध संपादक
मिग्मार छमचो

वितरण प्रबंधक
नावांग छोडेंन

संपादकीय एवं प्रकाशन कार्यालय :
भारत तिब्बत समन्वय केन्द्र
एच -१० लाजपत नगर -३
नई दिल्ली -११००२४, भारत

तिब्बत देश में प्रकाशित विचरों से संपादक, प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

इसमें प्रकाशित सामग्री का उपयोग अन्यत्र किया जा सकता है। कृपया तिब्बत देश का उल्लेख अवश्य करें ।

समाचार -

- परम पावन दलाई लामा के शुभचिंतकों ने उनके सफल उपचार के लिए दुनिया भर में औषधि-बुद्ध मंत्र का जाप किया 1
- परम पावन दलाई लामा ने नालंदा विश्वविद्यालय के उद्घाटन पर प्रधानमंत्री मोदी को बधाई दी 2
- परम पावन दलाई लामा अमेरिका पहुंचे, १०,००० से अधिक लोगों ने की अगवानी 3
- 'नेशनल एंडोमेंट फॉर डेमोक्रेसी' ने सिक्योंग पेन्पा शेरिंग को प्रतिष्ठित लोकतंत्र सेवा पदक से सम्मानित किया 4
- सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने ऐतिहासिक तीसरी जीत के लिए भारतीय प्रधानमंत्री मोदी को बधाई दी 5
- दिल्ली स्थित राजनयिकों और विशेषज्ञों के समूह ने निर्वासित तिब्बती संसद का दौरा किया 6
- उच्चस्तरीय अमेरिकी प्रतिनिधिमंडल ने केंद्रीय तिब्बती प्रशासन का दौरा किया 7
- तिब्बतियों के प्रति अमेरिकी प्रतिनिधिमंडल के समर्थन के सम्मान में सीटीए ने सार्वजनिक अभिनंदन समारोह आयोजित किया 8
- शिक्षा कलोन ने एसईई लर्निंग कार्यशाला के समापन समारोह में सामाजिक प्रगति में नैतिकता की भूमिका पर प्रकाश डाला 9

समाचार -

- यूरोपीय संघ ने ३९वें यूरोपीय संघ-चीन मानवाधिकार वार्ता में परम पावन दलाई लामा के उत्तराधिकार में चीन के हस्तक्षेप का विरोध किया 10
- यूरोपीय संसद के १०० से अधिक उम्मीदवारों ने तिब्बत का समर्थन करने की प्रतिज्ञा की 11
- तिब्बत समाधान विधेयक के लिए अमेरिकी प्रतिनिधि सभा में निलंबन प्रस्ताव पारित, अब राष्ट्रपति के पास जाएगा 12
- तिब्बत के आत्मनिर्णय के अधिकार समर्थक प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित करने पर सीटीए ने कनाडा के हाउस ऑफ कॉमन्स का स्वागत किया 13

मुद्रक एवं प्रकाशक
जमयांग दोरजी द्वारा
नोरबू ग्राफ़िक्स , 1/6, बेसमेंट
विक्रम विहार , लाजपत नगर
नई दिल्ली - 110024

तिब्बत के बारे में नियमित जानकारी के लिए भारत - तिब्बत समन्वय केन्द्र की वेबसाइट

coordinator@indiatibet.net

अपनी बात ◆ # अमरीकी कांग्रेस के प्रतिनिधिमंडल की दलाईलामा से भेंट महत्वपूर्ण

अमरीकी कांग्रेस के प्रतिनिधिमंडल की जून, 2024 में तिब्बती धर्मगुरु परमपावन दलाईलामा से भेंट तिब्बती समस्या के समाधान में एक सार्थक कदम है। यह प्रतिनिधिमंडल निर्वासित तिब्बत सरकार तथा भारत सरकार से भी मिला। भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मिलकर इसने उन्हें लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने पर विषेष रूप से बधाई तथा शुभकामनायें दी है। इस प्रतिनिधिमंडल के प्रवास से तिब्बती और तिब्बत समर्थक अत्यन्त उत्साहित हैं। भारत सरकार भी प्रसन्न है कि इससे भारत-अमरीकी संबंध और अधिक मित्रतापूर्ण, विष्वसनीय एवं मजबूत होंगे। इससे भिन्न स्थिति चीन सरकार की है। उसने इस प्रतिनिधिमंडल के प्रवास को रोकने की पूरी कोषिष की। उसने अमरीकी सरकार को गंभीर परिणामों की चेतावनी भी दी। इसके बावजूद अमरीकी कांग्रेस के प्रतिनिधिमंडल ने अपनी यात्रा सफलतापूर्वक की। इस यात्रा ने चीन सरकार को तिब्बत के मामले में स्पष्ट संकेत और संदेष दिये हैं।

अमरीकी कांग्रेस की प्रतिनिधि सभा में विदेष मामलों की समिति के अध्यक्ष माइकल मैककॉल के नेतृत्व में अमरीकी कांग्रेस के उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल ने धर्मगुरु दलाईलामा से मिलकर चीन को बता दिया कि अमरीकी सरकार की नजर में दलाईलामा की "मध्यममार्ग नीति" के आधार पर ही तिब्बत एवं चीन के बीच वार्ता पुनः प्रारम्भ होनी चाहिये। ज्ञातव्य है कि 2010 से तिब्बत एवं चीन के बीच वार्ता बंद है। इस प्रतिनिधिमंडल में शामिल प्रतिनिधि सभा की पूर्व अध्यक्ष नैन्सी पैलोसी इसी दृष्टिकोण का समर्थक प्रारम्भ से रही हैं। प्रतिनिधिमंडल के सभी सदस्य तिब्बत मामले पर एकमत हैं।

अमरीकी कांग्रेस के दोनों सदनों ने पूर्ण बहुमत से तिब्बत संबंधी विधेयक पारित किया है। अमरीकी राष्ट्रपति जो बाइडेन के हस्ताक्षर होते ही, जिसकी प्रबल संभावना है, यह विधेयक 2024 का रिजोल्व तिब्बत एक्ट बन जायेगा। कांग्रेसी प्रतिनिधिमंडल में शामिल सदस्यों ने ही इस विधेयक को प्रस्तावित-पारित कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इसके पहले वर्ष 2002 में अमरीका ने तिब्बत पॉलिसी एक्ट बनाया था। इसी प्रकार वर्ष 2008 में रैसीप्रोकल तिब्बत एक्ट बनाया था। उसने वर्ष 2022 में तिब्बत पॉलिसी एन्ड सपोर्ट एक्ट बनाया था। इस प्रकार तिब्बत का प्ररष्न लंबे समय से अमरीका-चीन द्विपक्षीय संबंधों के केन्द्र में रहा है।

अमरीकी कांग्रेस के प्रतिनिधिमंडल का दलाईलामा के साथ दर्षन-संवाद कार्यक्रम बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि वे अपने समस्त राजनीतिक अधिकार निर्वासित तिब्बत सरकार को सौंपकर स्वयं को सिर्फ धार्मिक दायित्वों तक सीमित कर चुके हैं। प्रतिनिधिमंडल का निर्वासित तिब्बत सरकार के साथ सार्थक संवाद भी सराहनीय है। उसे भलीभाँति पता है कि इसे तिब्बती समुदाय ने लोकतांत्रिक निर्वाचन प्रक्रिया को अपनाकर वयस्क मताधिकार का प्रयोग करते हुए निर्वाचित किया है। हिमाचल प्रदेष के कांगड़ा जिलांतर्गत धर्मषाला से संचालित निर्वासित तिब्बत सरकार वास्तव में लोकतांत्रिक तरीके से निर्वाचित सरकार है। तिब्बती समुदाय का लोकतंत्रीकरण दलाईलामा की विषेष देन है।

अमरीका के तिब्बत संबंधी एक्ट के प्रावधान चीन की हठधर्मिता पर रोक लगाने वाले हैं। रैसीप्रोकल तिब्बत एक्ट 2008 में प्रावधान था कि चीन सरकार अमरीकी अधिकारियों को संपूर्ण तिब्बत क्षेत्र में भ्रमण की अनुमति दे नहीं तो चीनी अधिकारियों को भी अमरीका में ऐसी अनुमति नहीं दी जायेगी। इसी प्रकार 2002 तथा 2022 के एक्ट में तिब्बती पर्यावरण, धर्म, संस्कृति, भाषा एवं इतिहास के संरक्षण पर जोर है।

अमरीका के 2024 के एक्ट के अनुसार अमरीका यथाशक्ति प्रयास करेगा कि चीन सरकार द्वारा दलाईलामा एवं निर्वासित तिब्बत सरकार के साथ पुनः सार्थक वार्ता की जाये। चीन के अपने संविधान तथा राष्ट्रीयता संबंधी कानून के अनुकूल चीन सरकार अपने पास प्रतिरक्षा एवं विदेष विभाग रखे। वह षिक्षा एवं धर्म-संस्कृति संबंधी अन्य सभी विषय तिब्बत सरकार को सौंपे। इससे चीन की एकता-अखंडता-संप्रभुता के साथ ही तिब्बतियों के स्वषासन के अधिकार का भी संरक्षण हो जायेगा। यही है सफल समाधान अर्थात् "मध्यममार्ग नीति"।

चीन ने तिब्बत संबंधी ऐतिहासिक तथ्यों को विकृत कर रखा है। उसने तिब्बत के संपूर्ण भौगोलिक क्षेत्र में से थोड़े हिस्से को तथाकथित "स्वायत्त तिब्बत क्षेत्र" नाम दिया है। शेष भौगोलिक क्षेत्र को उसने अपने किंघई, सिचुआन, गांसू एवं युन्नान प्रांतों में मिला लिया है। तथाकथित स्वायत्त तिब्बत क्षेत्र में भी समस्त लोकतांत्रिक अधिकार, मानवाधिकार सहित, प्रतिबंधित हैं। षड्यंत्रपूर्वक तिब्बती पहचान को समाप्त करने हेतु इस क्षेत्र का चीनीकरण किया जा रहा है। अमरीका मानता है कि तिब्बत ऐतिहासिक रूप से चीन का अंग नहीं है। चीन सरकार तिब्बत को चीन का अंग बताने का दुष्प्रचार बंद करे। अमरीका सरकार ने स्वतंत्र तिब्बत पर साम्राज्यवादी चीन के अवैध नियंत्रण को ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर खुली चुनौती दी है। इससे चीन के साजिषपूर्व भ्रामक दुष्प्रचार को गंभीर झटका लगा है।

भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ वार्ता में अमरीकी कांग्रेस के प्रतिनिधिमंडल ने भारत-अमरीका द्विपक्षीय संबंधों को नई विष्वसनीय ऊँचाई पर ले जाने की बात की। भारत सरकार भी ऐसा ही चाहती है। इसमें तिब्बती प्रष्न पर भी ठोस नीति अपनानी होगी। तिब्बती एवं तिब्बत समर्थक चाहते हैं कि अमरीका के रिजोल्व तिब्बत एक्ट की तरह अन्य देष भी तिब्बत के पक्ष में एक्ट बनायें। तिब्बत का पड़ोसी होने के कारण भारत की भूमिका अधिक महत्वपूर्ण है। वर्ष 1959 तक भारत एवं चीन के बीच तिब्बत एक स्वतंत्र देष अर्थात् "बफर स्टेट" था। उस समय तक भारत-चीन संबंध मधुर थे। इसके बाद भारत-चीन संबंधों में अविष्वास एवं संदेह लगातार हावी है।

प्रो0 श्यामनाथ मिश्र
पत्रकार एवं अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, खेतड़ी (राजस्थान)

मो.-9079352370, 8764060406
E-mail & Facebook: - shyamnathji@gmail.com

◆ परम पावन दलाई लामा के शुभचिंतकों ने उनके सफल उपचार के लिए दुनिया भर में औषधि-बुद्ध मंत्र का जाप किया

२८ जून, २०२४

धर्मशाला। तिब्बती लोगों समेत दुनिया भर में परम पावन दलाई लामा के शुभचिंतक अपने-अपने स्थान पर मठों और सामुदायिक परिसरों में परम पावन के घुटने के सफल चिकित्सा उपचार के लिए औषधि-बुद्ध के मंत्र का जाप कर रहे हैं। अमेरिका में यह आयोजन आज २८ जून को किया जा रहा है।

दुनिया भर में प्रार्थना सेवाओं का समन्वय वहां स्थित तिब्बत कार्यालयों, तिब्बती सेटलमेंट कार्यालयों, तिब्बती संघों, संस्थानों, गैर सरकारी संगठनों, मठों, स्कूलों और तिब्बत समर्थकों द्वारा किया जा रहा है। इसी तरह, केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) के विभिन्न विभागों और कार्यालयों ने आज २८ जून की दोपहर मंत्र जाप में शामिल होने के लिए अपने दैनंदिन कार्यों को रोक दिया।

एक सप्ताह पहले २१ जून को परम पावन दलाई लामा अपने घुटने के उपचार के लिए धर्मशाला से स्विट्जरलैंड होते हुए अमेरिका रवाना हुए थे। इस घटना की पूर्व सूचना देते हुए, तिब्बती राजपुरोहित नेचुंग चोएग्याल ने आगाह कर दिया था कि भक्तों और अनुयायियों को औषधि बुद्ध मंत्र का जाप करना चाहिए।

◆ परम पावन दलाई लामा ने नालंदा विश्वविद्यालय के उद्घाटन पर प्रधानमंत्री मोदी को बधाई दी

२४ जून, २०२४

धर्मशाला। परम पावन दलाई लामा ने बिहार के राजगीर में नए नालंदा विश्वविद्यालय के परिसर के उद्घाटन पर बधाई देते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र लिखा है।

परम पावन ने लिखा, 'मूल प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय पूर्व में शिक्षा-केंद्र के रूप में सूर्य की तरह चमकता था। प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय में गहन अध्ययन, चर्चा और बहस पर आधारित शिक्षा फली-फूली, जिसने

पूरे एशिया से छात्रों को अपनी ओर आकर्षित किया। विभिन्न देशों से आए छात्रों ने यहां दर्शन, विज्ञान, गणित और चिकित्सा के अलावा अहिंसा और करुणा की सदियों पुरानी भारतीय परंपराओं के बारे में सीखा, जो आज की दुनिया में न केवल प्रासंगिक बल्कि आवश्यक भी हैं।

परम पावन ने लिखा, 'प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय के छात्रों ने इन सकारात्मक गुणों के अलावा मन और भावनाओं की कार्यप्रणाली की गहन समझ विकसित की थी, जो शांति (शमथ) और अंतर्दृष्टि (विपश्यना) विकसित करने के लिए पारंपरिक भारतीय ध्यान प्रणालियों से उत्पन्न हुई हैं। मेरा मानना है कि जिस तरह से नालंदा परंपरा ने कार्य- कारण के संदर्भ में इन गुणों को प्रस्तुत किया है, उसका मतलब है कि उन्हें मानवता के व्यापक लाभ के लिए आधुनिक शिक्षा के साथ आसानी से जोड़ा जा सकता है।' परम पावन ने पत्र को समाप्त करते हुए लिखा, 'मैं पूरे भारत सहित दूर देश तक के युवाओं में प्राचीन भारतीय ज्ञान और बुद्धिमत्ता को लेकर बढ़ती रुचि से बहुत उत्साहित हूं। इसमें व्यापक करुणामयी दुनिया के निर्माण में योगदान करने की बहुत बड़ी क्षमता है। चूँकि मैं प्राचीन भारतीय ज्ञान में अधिक रुचि और जागरुकता पैदा करने के लिए प्रतिबद्ध हूं, इसलिए यह अद्भुत है कि इस ऐतिहासिक स्थान पर एक नया नालंदा विश्वविद्यालय स्थापित किया गया है। मैं कामना करता हूं कि यह और समृद्ध हो और फले-फूले।'

◆ परम पावन दलाई लामा अमेरिका पहुंचे, १०,००० से अधिक लोगों ने की अगवानी

२४ जून, २०२४

वाशिंगटन डीसी। परम पावन १४वें दलाई लामा २३ जून २०२४ को स्विट्जरलैंड के ज्यूरिख में थोड़ी देर विश्राम के बाद सुरक्षित रूप से अमेरिका में न्यू जर्सी के टेटरबोरो हवाई अड्डे पर पहुंचे। हवाई अड्डे पर पहुंचने पर परम पावन को वाशिंगटन डीसी स्थित तिब्बत कार्यालय से प्रतिनिधि डॉ. नामग्याल चोएडुप और चीनी संपर्क अधिकारी सुल्लिम ग्यात्सो ने गर्मजोशी से स्वागत किया।

टेटरबोरो हवाई अड्डा पहुंचने पर न्यूयॉर्क में भारत के महावाणिज्य दूतावास में उप महावाणिज्य दूत डॉ. वरुण जेफ, उप महावाणिज्य दूत (स्थापना और प्रोटोकॉल) अवधेश कुमार और दूतावास के अभिमन्यु गहलोत, केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के पूर्व कलोन (मंत्री), सेरा जे. एबॉट ताशी शेडर, आक्या रिनपोछे के साथ न्यूयॉर्क और न्यू जर्सी स्थित लगभग चार हज़ार श्रद्धेय लामा और परम पावन के अनुयायी परम पावन की अगवानी करने और उनका आशीर्वाद लेने के लिए हवाई अड्डे पर एकत्र थे।

हवाई अड्डे से परम पावन दलाई लामा ने अमेरिकी सरकार के व्यवस्थित काफिले के साथ पार्क हयात होटल की ओर प्रस्थान किया, जहां बड़ी संख्या में भक्त, अनुयायी और तिब्बती सड़क पर खड़े थे और अपने हाथों में सद्भावना संदेश, शुभ प्रसाद, सफेद स्कार्फ (खटक) और धूपबत्ती लेकर परम पावन का स्वागत किया।

उसके बाद पार्क हयात के प्रवेश द्वार पर साक्य गोंगमा त्रिचेन दोरजीचांग रिनपोछे ने ग्याल्युम कुशो, काउंसल (एचओसी और सीपीआईओ) विशाल जयेशभाई हर्ष, रातो खेन रिनपोछे, गेशे थुप्तेन लहुंडुप, नामग्याल मठ के महंत आदरणीय तेनजिन चोसांग और ग्यालवा करमापा न्गोडुप पालजोम की बहन के साथ मिलकर परम पावन की अगवानी की। इस स्वागत समारोह में तिब्बती सांसद तेनजिंग जिग्मे, थोंडुप शेरिंग, खेंपो काडा न्गोडुप सोनम, तिब्बत कार्यालय में तिब्बती जनसंपर्क अधिकारी कुंगा ताशी के साथ न्यूयॉर्क और न्यू जर्सी के तिब्बती एसोसिएशन के अध्यक्ष नोरबू शेरिंग भी शामिल हुए।

कुल मिलाकर दस हज़ार से ज़्यादा लोग और विभिन्न समाचार पत्रों से बड़ी संख्या में मीडियाकर्मी भी इस स्वागत समारोह में शामिल हुए, जिससे यह एक बड़ा और व्यापक रूप से कवर किया जाने वाला कार्यक्रम बन गया। हालांकि, परम पावन के निजी चिकित्सक और गादेन फोडरंग के सचिव के अनुसार, चिकित्सा उपचार को छोड़कर कोई सार्वजनिक कार्यक्रम नहीं होगा।

- वाशिंगटन डीसी स्थित तिब्बत कार्यालय द्वारा दायर रिपोर्ट

◆ 'नेशनल एंडोमेंट फॉर डेमोक्रेसी' ने सिक्योंग पेन्पा शेरिंग को प्रतिष्ठित लोकतंत्र सेवा पदक से सम्मानित किया

१४ जून, २०२४

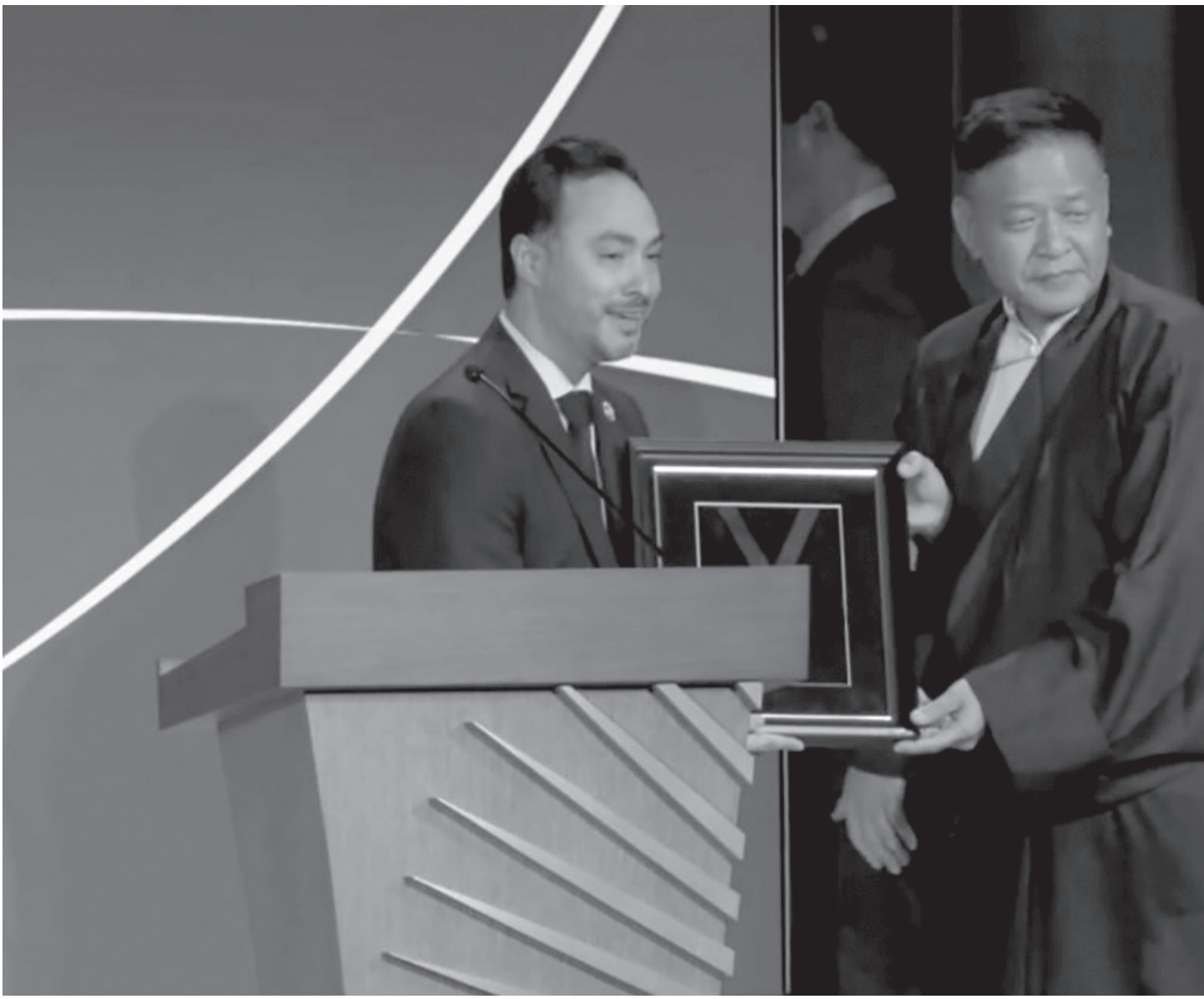

धर्मशाला। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) के सिक्योंग पेन्पा शेरिंग को १३ जून २०२४ को वाशिंगटन डीसी में तिब्बतियों की ओर से लोकतंत्र और मानवाधिकारों की रक्षा करने में उनके विशिष्ट योगदान के लिए प्रतिष्ठित लोकतंत्र सेवा पदक से सम्मानित किया गया। इसके साथ ही अमेरिकी प्रतिनिधि सभा की स्पीकर एमेरिटस नैन्सी पेलोसी, अमेरिकी सीनेट में रिपब्लिकन नेता मिच मैककोनेल, जेल में बंद रूसी विपक्षी नेता व्लादिमीर कारा-मुर्ज़ा और फ्री बेलारूस की नेता स्वियातलाना शिखानौस्काया सहित कई अन्य प्रमुख हस्तियों को भी इस समारोह में सम्मानित किया गया।

कल १३ जून को नेशनल एंडोमेंट फॉर डेमोक्रेसी (एनईडी) द्वारा आयोजित पुरस्कार समारोह के दौरान अमेरिकी प्रतिनिधि सभा के सदस्य प्रतिनिधि जोआक्विन कास्त्रो ने सिक्योंग पेन्पा शेरिंग को लोकतंत्र सेवा पदक प्रदान करते हुए टिप्पणी की, 'भले ही हमारे देश का राजनीतिक रूप से ध्रुवीकरण हो गया हो, फिर भी दशकों से अमेरिकी कांग्रेस ने तिब्बत के लोगों के लिए दृढ़ और सर्वसम्मत समर्थन बनाए रखा है। कल ही मैंने प्रतिनिधि सभा में अपने सहयोगियों के साथ दोनों दलों द्वारा पेश 'रिज़ोल्व तिब्बत ऐक्ट' पारित किया है, जिस पर राष्ट्रपति बिडेन जल्द ही हस्ताक्षर करेंगे। यह कानून तिब्बत के लिए अमेरिका की प्रतिबद्धता को मजबूत करेगा और इसके भविष्य के लिए हमारी प्रतिबद्धता को

दोहराएगा।'

प्रतिनिधि जोआक्विन कास्त्रो ने आगे कहा, 'जैसा कि आप जानते हैं, तिब्बती लोगों का एक लंबा और गौरवशाली इतिहास रहा है। यह इतिहास तिब्बत की ऐतिहासिक भूमि में गहराई से निहित है। हाल के वर्षों में तिब्बती लोगों के खिलाफ बलपूर्वक जनसंख्या का स्थानांतरण और अन्य अपराधों में खतरनाक वृद्धि हुई है। इसके बावजूद तिब्बत के नेताओं, विशेष रूप से निर्वासित तिब्बती सरकार के नेताओं ने अपने देशवासियों के बीच अपनी छवि को जीवंत रखने के लिए उल्लेखनीय कार्य किया है।'

निर्वासित तिब्बतियों द्वारा २०२१ के सिक्योंग चुनाव में ७७% मतदान का उल्लेख करते हुए प्रतिनिधि ने कहा कि 'यह निर्वासित सरकार के इतिहास में सबसे अधिक मतदान था और तिब्बत के भीतर लोकतंत्र की लालसा का एक शक्तिशाली संकेत था।' उन्होंने कहा, 'सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने पदभार संभालने के बाद से चीन के दुनिया भर में प्रभाव का मुकाबला करने के लिए काम किया है और तिब्बत के सहयोगियों को तिब्बत के भीतर सांस्कृतिक पहचान के दमन के खिलाफ बोलने के लिए संगठित किया है। उन प्रयासों के लिए उनके विशिष्ट योगदान को देखते हुए नेशनल एंडोमेंट फ़ॉर डेमोक्रेसी की ओर से सिक्योंग पेन्पा शेरिंग को २०२४ का लोकतंत्र सेवा पदक प्रदान करना मेरे लिए सम्मान की बात है।'

पुरस्कार ग्रहण करने के बाद अपने संबोधन में सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने कहा, 'मैं एनईडी बोर्ड के सदस्यों और इसके पिछले नेता हॉल कुशमैन को धन्यवाद देना चाहता हूँ, जिन्होंने कई वर्षों तक तिब्बतियों के साथ मिलकर काम किया है और एनईडी में उनका ३० से अधिक वर्षों का करियर है। इसके साथ ही वर्तमान नेता डेमन विल्सन और उनकी टीम को इस सेवा पदक से हमें सम्मानित करने के लिए धन्यवाद देना चाहता हूँ।'

अपने साथ ही इस पुरस्कार से सम्मानित हुई हस्तियों को हार्दिक बधाई देते हुए सिक्योंग ने कहा, 'मैं एक बहुत ही साधारण व्यक्ति हूं, मैं बस परम पावन की इच्छाओं का अनुसरण करने का प्रयास करता हूँ, आज तिब्बतियों के पास जो कुछ भी है, उसका श्रेय परम पावन १४वें दलाई लामा को जाता है। सिक्योंग ने कहा, 'वह इसके निर्माता हैं; आज हम जो कुछ भी हैं या जो कुछ भी हमारे पास है, उसके पीछे उनकी ही आत्मा है। मैंने व्यक्तिगत रूप से उतना योगदान नहीं दिया है जितना आप उम्मीद करते हैं। तिब्बती लोगों के लिए मेरी सेवा के केवल ३० वर्ष हुए हैं और यह पुरस्कार उन लोगों के लिए है जिनकी मैं सेवा करता हूं। वे तिब्बती लोग हैं और उनका प्रतिनिधि केंद्रीय तिब्बती प्रशासन है।'

निर्वासित तिब्बती समुदाय की मजबूत और पूरी तरह गतिशील तिब्बती लोकतांत्रिक राजनीति के साक्ष्य के तौर पर सिक्योंग ने केंद्रीय तिब्बती प्रशासन में तीन लोकतांत्रिक स्तंभों की उपस्थिति को स्पष्ट किया और आगे तीन स्वायत्त निकायों, अर्थात् चुनाव आयोग, महालेखा परीक्षक का कार्यालय, और लोक सेवा आयोग के अतिरिक्त सरकार में सात मंत्रालयों के वजूद के बारे में विस्तार से बताया। इसके लिए उन्होंने भारत और अमेरिका की सरकारों के प्रति विशेष आभार व्यक्त किया।

इसके अलावा, सिक्योंग ने तिब्बत के भीतर सांस्कृतिक संहार के चिंताजनक तरीके के बारे में बात की, जो चीन द्वारा विविध पहचानों की कीमत पर एकसंस्कृतिवाद को बढ़ावा देने और विभिन्न तरीकों से तिब्बती लोगों के दमन के कारण बढ़ रहा है। उन्होंने कहा 'ऐसे कई अन्य मुद्दे हैं, जिन्हें आप अमेरिका और दुनिया के अन्य स्वतंत्र देशों में में आम तौर पर देखते हैं, तिब्बत में मौजूद नहीं हैं।' इस अवसर पर सिक्योंग ने दोनों पक्षों के बीच बातचीत को बढ़ावा देने वाले 'तिब्बत समाधान अधिनियम' को आगे बढ़ाने में समर्थन देने के लिए अमेरिकी प्रतिनिधियों और अमेरिकी कांग्रेस के महिला-पुरुष सांसदों को धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा, 'मैं सभी देशों से यह भी कहता हूं कि एक ओर तो वे कहते हैं कि तिब्बत पीआरसी का हिस्सा है और दूसरी ओर वे कहते हैं कि हम परम पावन दलाई लामा के प्रतिनिधियों और चीनी सरकार के बीच वार्ता का समर्थन करते हैं। इस पर मैं उनसे कहना चाहता हूं कि ऐसा कहकर आप वार्ता के लिए आधार ही खत्म कर रहे हैं, क्योंकि तिब्बत को पीआरसी का हिस्सा मानने वाले देश अनजाने में परम पावन दलाई लामा के प्रतिनिधियों और चीनी सरकार के बीच वार्ता के प्रयासों को कमजोर कर रहे हैं।'

अपने संबोधन का समापन करते हुए सिक्योंग ने कहा, 'हम इस दुनिया में स्वतंत्र पैदा हुए हैं, सभी मनुष्य स्वतंत्र रहने के लिए ही पैदा हुए हैं न कि शारीरिक या मानसिक रूप से गुलाम होने के लिए। लेकिन तिब्बत के अंदर ठीक यही हो रहा है और हमें आपके समर्थन की पहले से कहीं

ज्यादा जरूरत है।'

यह पदक लंबे समय से तिब्बत समर्थक अमेरिकी प्रतिनिधि सभा की स्पीकर एमेरिटस नैन्सी पेलोसी को भी दुनिया भर में लोकतंत्र के पैरोकारों और इसके लिए बहुत बड़ा जोखिम उठाने वालों को मुखर समर्थन के लिए प्रदान किया गया। वह खास तौर पर ताइवान और यूक्रेन सहित लोकतांत्रिक सहयोगियों के लिए अपनी आवाज उठाती रही हैं।

इसी समय, तिब्बत एक्शन इंस्टीट्यूट को तिब्बत में सरकारी औपनिवेशिक प्रणाली के आवासीय स्कूलों में तिब्बती बच्चों को जबरन दाखिला देकर उनकी पहचान मिटाने के चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के प्रयासों का दस्तावेजीकरण करने के लिए इस वर्ष के लोकतंत्र पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार क्षेत्रीय मानवाधिकार केंद्र और वेई संगठन को भी प्रदान किया गया।

१९९९ से एनईडी ने कई अलग- अलग क्षेत्रों में काम करने वाले उन व्यक्तियों को लोकतंत्र सेवा पदक से सम्मानित किया है, जिन्होंने व्यक्तिगत प्रतिबद्धता के माध्यम से स्वतंत्रता और मानवाधिकारों की उन्नति और लोकतांत्रिक संस्थानों के निर्माण के लिए अपने समर्पण का प्रदर्शन किया है।

◆ सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने ऐतिहासिक तीसरी जीत के लिए भारतीय प्रधानमंत्री मोदी को बधाई दी

०६ जून, २०२४

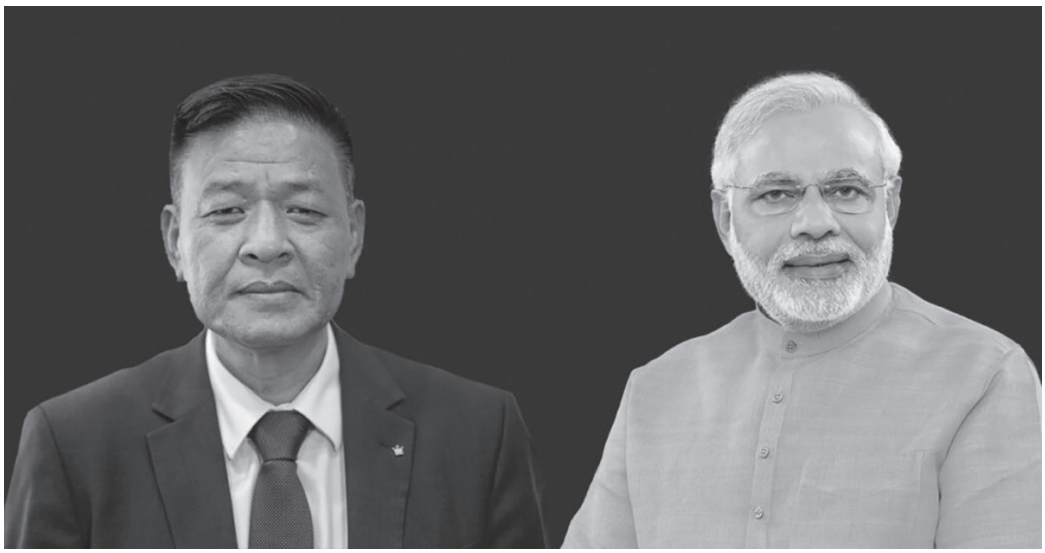

केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने ०६ जून २०२४ को भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) को हालिया आम चुनाव में उनकी ऐतिहासिक जीत पर बधाई दी। प्रधानमंत्री मोदी को संबोधित पत्र में सिक्योंग ने चुनावी जीत का श्रेय मोदी के मजबूत नेतृत्व और राष्ट्र की प्रगति के लिए एनडीए की प्रतिबद्धता में भारत के लोगों द्वारा व्यक्त किए गए स्थायी भरोसे और विश्वास को दिया।

सिक्योंग ने दशकों से परम पावन दलाई लामा और तिब्बती समुदाय को दीर्घकालिक समर्थन और आतिथ्य के लिए भारत सरकार और भारतीय जनता के प्रति आभार व्यक्त किया। पत्र में कहा गया है, 'भारत ने हमें सम्मानित अतिथि के रूप में उदारतापूर्वक गले लगाया है। हमें सुरक्षित और सुरम्य आवास प्रदान किया है, जहां हम अपनी विशिष्ट संस्कृति, भाषा और विरासत की रक्षा कर सकते हैं।' पत्र में सिक्योंग नेपरम पावन दलाई लामा और भारत के बीच गहरे संबंधों पर भी प्रकाश डाला है। परम पावन द्वारा खुद को भारतीय परंपरा की संतान के रूप में बार-बार कहे जाने और उनके दार्शनिक विचारों पर प्राचीन नालंदा परंपरा के गहन प्रभाव को स्वीकार करने पर ध्यान दिया गया। सिक्योंग ने पत्र में प्राचीन भारतीय ज्ञान और बुद्धिमत्ता को पुनर्जीवित करने के लिए परम पावन के समर्पण को भी रेखांकित किया और इस सम्मानजनक मिशन में केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा समर्थन दिए जाने को लेकर गहरा आभार व्यक्त किया है। पत्र में सिक्योंग शेरिंग ने दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत से वर्तमान वैश्विक उथल-पुथल के माहौल में अपने समान विचारधारा वाले देशों के साथ लोकतांत्रिक सहयोग बनाने और बढ़ाने में नेतृत्वकारी भूमिका में आने का आग्रह किया। सिक्योंग ने मोदी को लिखा, जब आप इस ऐतिहासिक तीसरे कार्यकाल में प्रवेश कर रहे हैं, हम इस बात के प्रति अत्यधिक आशावादी हैं कि आपके नेतृत्व में भारत लोकतंत्र, स्वतंत्रता और मानवाधिकारों के मूल्यों को आगे बढ़ाने में उल्लेखनीय योगदान करेगा।'

◆ दिल्ली स्थित राजनयिकों और विशेषज्ञों के समूह ने निर्वासित तिब्बती संसद का दौरा किया

१७ जून, २०२४

धर्मशाला। दिल्ली स्थित राजनयिकों और विशेषज्ञों के एक समूह ने १७ जून को एफएनएफ के नेतृत्व में निर्वासित तिब्बती संसद का दौरा किया। इस दौरान १७ जून को ही समूह ने संसदीय सचिवालय में निर्वासित तिब्बती संसद के स्पीकर खेंपो सोनम तेनफेल और डिप्टी स्पीकरडोल्मा शेरिंग तेखांग के साथ बैठक की। मेहमानों को तिब्बती संसद के हॉल में ले जाया गया, जहाँ उन्हें संसद के विकास, संरचना और कार्यप्रणाली के बारे में जानकारी दी गई।

समूह में विल्हेम टेक्सटाइल के प्रबंध निदेशक एरिक इलिग, नई दिल्ली में जर्मन दूतावास में राजनीतिक मंत्री काउंसलर सलाहकार मारियस ओसवाल्ड, कोच्चि में सेंटर फॉर पब्लिक पॉलिसी रिसर्च के संस्थापक अध्यक्ष डी. धनुराज पीएचडी, एफएनएफ दक्षिण एशिया क्षेत्रीय कार्यालय के प्रमुख डॉ. कार्स्टन किसिन, एफएनएफ दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय परियोजना प्रबंधक फ्रैंक हॉफमैन, फएनएफ दक्षिण एशिया में वरिष्ठ कार्यक्रम प्रबंधक नूपुर हसीजा, एफएनएफ दक्षिण एशिया की क्षेत्रीय आंतरिक लेखा परीक्षक शिक्षा खन्ना और स्वतंत्र जर्मन-अंग्रेजी अनुवादक रितु खन्ना शामिल थीं।

अतिथियों का स्वागत स्पीकर खेंपो सोनम तेनफेल और डिप्टी स्पीकर डोल्मा शेरिंग तेखांग ने किया। इसके बाद निर्वासित तिब्बती संसद हॉल के सुनियोजित दौरे में डिप्टी स्पीकर डोल्मा शेरिंग तेखांग ने अतिथियों को तिब्बती संसद की संरचना के बारे में बताया। उन्होंने विस्तार से बताया कि कैसे संसद बजटीय मामलों को प्राथमिकता देती है और अपने अर्धवार्षिक सत्रों के दौरान अपने कार्यपालिका के कामकाज की जांच करती है। इस जानकारीपूर्ण सत्र के दौरान मेहमानों को निर्वासित तिब्बती संसद के कामकाज और विकास के बारे में जानकारी दी गई। उन्होंने तिब्बत में

जनसांख्यिकीय परिवर्तन, क्षय होते आजाद माहौल के विरोध में तिब्बतियों द्वारा किए गए दुखद आत्मदाह और क्षेत्र में गंभीर मानवाधिकार हनन के बारे में भी चिंता व्यक्त की। डिप्टी स्पीकर ने तिब्बत में रह रहे तिब्बतियों की आवाज को बुलंद करने में सहयोग करने के लिए आए मेहमानों से अपील की। इसके बाद स्थायी समिति के हॉल में एक बैठक हुई, जिसमें स्पीकर ने तिब्बती लोकतंत्र के उत्कर्ष में एफएनएफ के योगदान के लिए उसकी हार्दिक प्रशंसा व्यक्त की। उन्होंने तिब्बत का समर्थन करने के लिए यूरोपीय संसद में कई सदस्यों द्वारा किए गए वादों की भी प्रशंसा की। स्पीकर ने आने वाले मेहमानों को तिब्बती संसदीय प्रतिनिधिमंडल द्वारा यूरोप की आगामी यात्राओं और अन्य पक्षधर अभियान कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी। इसके बाद एक प्रश्नोत्तर सत्र आयोजित किया गया, जिसमें डिप्टी स्पीकर ने मेहमानों के सवालों के जवाब दिए।

-निर्वासित तिब्बती संसद द्वारा दायर रिपोर्ट

◆ उच्चस्तरीय अमेरिकी प्रतिनिधिमंडल ने केंद्रीय तिब्बती प्रशासन का दौरा किया

१८ जून, २०२४

धर्मशाला। अमेरिका की कांग्रेस (संसद) के दोनों सदनों से दोनों दलों का समर्थन वाला एक उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल आज १८ जून को केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) के दौरे पहुंचा। प्रतिनिधिमंडल ने परम पावन दलाई लामा के साथ अपनी बहुप्रतीक्षित बैठक की पूर्व संध्या पर तिब्बती नेतृत्व से मुलाकात की।

अमेरिकी कांग्रेस में विदेश संबंध मामलों की समिति के अध्यक्ष प्रतिनिधि माइकल मैककॉल ने प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। इस प्रतिनिधिमंडल में कैलिफोर्निया से डेमोक्रेटिक सांसद और प्रतिनिधि सभा की स्पीकर एमेरिटा नैन्सी पेलोसी, आयोवा से प्रतिनिधि सभा में रिपब्लिकन सांसद मैरिएनेट मिलर-मीक्स, न्यूयार्क से प्रतिनिधि सभा में डेमोक्रेटिक सांसद और हाउस वेटरन्स अफेयर्स कमेटी के ग्रेगरी मीक्स, न्यूयार्क से प्रतिनिधि सभा में रिपब्लिकन सांसद और कांग्रेस में विदेश विभाग समिति में रैंकिंग सदस्य निकोल मैलियोटाकिस, मैसाचुसेट्स से प्रतिनिधि सभा के सदस्य और हाउस वेज़ एंड मीन्स कमेटी के सदस्य जिम मैकगवर्न, हाउस रूल्स कमेटी शामिल हैं और कैलिफोर्निया से डेमोक्रेटिक पार्टी से प्रतिनिधि सभा के सदस्य और विदेश विभाग समिति के सदस्य अमी बेरा शामिल थे। प्रतिनिधिमंडल के साथ उनके परिवार के सदस्य और कर्मचारी भी थे।

कांगड़ा हवाई अड्डे पर पहुंचने पर अमेरिकी प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों का सूचना और अंतराष्ट्रीय संबंध विभाग (डीआईआईआर) की कलोन (मंत्री) नोरज़िन डोल्मा और उनके सहयोगियों द्वारा गर्मजोशी से स्वागत किया गया। स्वागत करने वालों में डीआईआईआर सचिव कर्मा चोयिंग, वाशिंगटन स्थित तिब्बत कार्यालय के प्रतिनिधि डॉ. नामग्याल चोएडुप, नई दिल्ली में परम पावन दलाई लामा के ब्यूरो में सचिव धोंडुप ग्यालपो, धर्मशाला तिब्बती सेटलमेंट अधिकारी कुंचोक मिग्मार और सीटीए के प्रोटोकॉल अधिकारी तेनज़िन पलजोर शामिल थे।

हवाई अड्डे पर मीडिया से बात करते हुए सांसद मैककॉल ने कहा, 'हम कल परम पावन को कई मुद्दों पर सुनने के लिए बहुत उत्साहित हैं, जिसमें वह बिल भी शामिल है जो अभी-अभी कांग्रेस से पारित हुआ है। यह विधेयक मूल रूप से कहता है कि संयुक्त राज्य अमेरिका तिब्बत के लोगों के साथ खड़ा है।' मीडिया द्वारा पूछे जाने पर प्रतिनिधि ने आगे आश्वासन दिया कि विधेयक पर अब पीओटीयूएस द्वारा हस्ताक्षर किए

जाने हैं।

अमेरिकी संसद द्वारा लंबे समय से चले आ रहे तिब्बत-चीन संघर्ष का समाधान खोजने में समर्पित समर्थन और प्रतिबद्धता के सम्मान में तिब्बती युवा छात्रों और विभिन्न गैर सरकारी संगठनों के सदस्यों सहित तिब्बती समुदाय ने हयात रीजेंसी होटल के सामने सड़क के दोनों ओर खड़े रहकर गर्मजोशी से अमेरिकी प्रतिनिधिमंडल का स्वागत किया।

प्रतिनिधिमंडल होटल में कुछ देर रुकने के बाद सीटीए परिसर का दौरा करने के लिए गंगचेन क्याशोंग चला गया, जहां उन्होंने सीटीए नेतृत्व से संक्षिप्त मुलाकात की। सीटीए नेतृत्व में सिक्योंग पेन्पा शेरिंग, स्पीकर खेंपो सोनम तेनफेल, तिब्बती न्याय आयुक्त तेनजिन लुंगटोक, डिप्टी स्पीकर डोल्मा शेरिंग तेखांग, शिक्षा कलोन थारलाम डोल्मा, सुरक्षा कलोन डोल्मा ग्यारी, डीआईआईआर कलोन नोरज़िन डोल्मा, चुनाव और लोक सेवा आयुक्त वांगडू शेरिंग पेसुर, निर्वासित तिब्बती संसद की स्थायी समिति के सदस्य और सीटीए विभागों और कार्यालयों के सचिव शामिल थे।

सीटीए के अपने भ्रमण कार्यक्रम में प्रतिनिधिमंडल ने निर्वासित तिब्बती संसद और तिब्बत संग्रहालय का दौरा किया। बाद में शाम को सीटीए ने संयुक्त राज्य अमेरिका से आए सांसदों के सम्मान में तिब्बती कला संस्थान (टीआईपीए) में रात्रिभोज का आयोजन किया।

◆ तिब्बतियों के प्रति अमेरिकी प्रतिनिधिमंडल के समर्थन के सम्मान में सीटीए ने सार्वजनिक अभिनंदन समारोह आयोजित किया

१९ जून, २०२४

धर्मशाला। उच्चस्तरीय द्विदलीय कांग्रेस प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों की आज १९ जून २०२४ की सुबह-सुबह परम पावन दलाई लामा के साथ विशेष मुलाकात के बाद केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) ने प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों को सम्मानित करने के लिए शुगलागखांग में सार्वजनिक अभिनंदन समारोह आयोजित किया।

प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों के कार्यक्रम स्थल पर पहुंचने पर सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने वहां उपस्थित तिब्बतियों, तिब्बती छात्रों, भिक्षुओं, स्थानीय लोगों, विदेशी आगंतुकों और मीडिया कर्मियों के बड़े समूह के बीच स्वागत भाषण दिया। अपने स्वागत भाषण में सिक्योंग ने कांग्रेस प्रतिनिधिमंडल के प्रत्येक सदस्य का परिचय कराया और वर्तमान में राष्ट्रपति की मेज पर और तिब्बत पर अन्य सभी पिछले विधेयकों में 'रिज़ोल्व तिब्बत ऐक्ट' को आगे बढ़ाने में उनकी भूमिका के बारे में बताया।

सिक्योंग ने कहा, 'हमारे लिए यह बहुत ही दुर्लभ अवसर है। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के हम सभी, चाहे वह न्याय आयुक्त, स्पीकर, डिप्टी स्पीकर, मंत्री हों या स्वतंत्र निकाय, यहां के सभी लोग, हमारे स्कूलों के छात्र, माइकल मैककॉल के नेतृत्व में प्रतिनिधियों को अमेरिकी कांग्रेस में रिज़ोल्व तिब्बत ऐक्ट को आगे बढ़ाने के लिए उनकी दृढ़ता और प्रतिबद्धता के लिए धन्यवाद देने के लिए यहां एकत्र हुए हैं।' साथ ही उन्होंने तिब्बत के कट्टर समर्थक और परम पावन दलाई लामा के लंबे समय के मित्र अमेरिकी अभिनेता रिचर्ड गेरे के महत्वपूर्ण योगदान को याद किया, जिन्होंने इस विधेयक को पारित कराने की लंबी वकालत की।

इसके बाद, सिक्योंग ने उपस्थित लोगों को रिज़ॉल्व तिब्बत ऐक्ट और अमेरिकी कांग्रेस के दोनों सदनों में इसके पारित होने के बारे में संक्षेप में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि यह विधेयक कांग्रेस के सभी सदस्यों की आम सहमति से 'हॉटलाइन प्रक्रिया' में आगे बढ़ा। इस संबंध में, सिक्योंग ने सीनेट में विधेयक को आगे बढ़ाने के लिए रिपब्लिकन पार्टी के सीनेटर टॉड यंग और डेमोक्रेटिक पार्टी के सीनेटर जेफ मर्कले के साथ-साथ सीनेट की विदेश संबंध समिति के अध्यक्ष सीनेटर बेन कार्डिन के प्रति सीनेट में विधेयक को तेजी से आगे बढ़ाने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका के लिए आभार व्यक्त किया।

समापन से पहले सिक्योंग ने इस विधेयक को कानून में बदलने के लिए सभी पक्षों और स्तरों से किए गए प्रयासों के पीछे के कारण पर प्रकाश डाला और कहा कि यह कानून सीटीए की मध्यम मार्ग दृष्टिकोण नीति के अनुसार बिना किसी पूर्व शर्त के तिब्बतियों और चीनी सरकार के बीच बातचीत को बढ़ावा देता है।

इसके बाद धर्मशाला स्थित तिब्बती स्कूलों के छात्रों के एक समूह ने दौरे पर आए प्रतिनिधिमंडल के सम्मान में पारंपरिक नृत्य प्रस्तुत किया। फिर उन्हें उनके समर्थन के लिए आभार के प्रतीक के रूप में थंगका और स्वतंत्र तिब्बत की फ्रेमयुक्त मुद्रा भेंट की गई।

प्रतिनिधिमंडल के नेता प्रतिनिधि सभा के सदस्य माइकल मैककॉल ने सम्मान कार्यक्रम के बाद अपने संबोधन में भारत सरकार के समर्थन से तिब्बतियों के 'भविष्य की पीढ़ियों के लिए अपनी जीवन शैली' को बनाए रखने के दृढ़ संकल्प की सराहना की। साथ ही प्रतिनिधि मैककॉल ने कहा, 'मुझे अभी भी उम्मीद है कि एक दिन दलाई लामा और उनके लोग शांति से तिब्बत में अपने घर लौट आएंगे। दशकों बाद, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी तिब्बती लोगों की स्वतंत्रता के लिए खतरा बनी हुई है और उन्होंने खुद को दलाई लामा के उत्तराधिकारी के चयन में शामिल करने का भी गलत प्रयास किया है, लेकिन हम ऐसा नहीं होने देंगे।'

इसके अलावा प्रतिनिधि मैककॉल ने अत्याचार पर लोकतंत्र की महानता को लेकर टिप्पणी की और खुलासा किया, 'इसी सप्ताह हमारे प्रतिनिधिमंडल को चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (सीसीपी) से एक पत्र मिला,

जिसमें हमें यहां न आने की चेतावनी दी गई है। लेकिन हमने सीसीपी का कोई डर नहीं माना और हम आज यहां हैं।' यह कहते हुए कि तिब्बत चीन का हिस्सा नहीं है, प्रतिनिधि ने इस बात का समर्थन किया कि तिब्बती लोगों को भी आत्मनिर्णय का अधिकार होना चाहिए।

प्रतिनिधि माइकल मैककॉल के बाद प्रतिनिधि ग्रेगरी मीक्स ने कहा, 'मैं यहां अमेरिका विदेश मंत्रालय संबंधी समिति के रैंकिंग सदस्य के रूप में उपस्थित हूं। मैं आप सभी को यह बताने के लिए इस द्विदलीय प्रतिनिधिमंडल के साथ यहां हूं कि अमेरिकी कांग्रेस में हम एक साथ हैं और हम इस पर ध्यान दे रहे हैं। तिब्बती लोगों के लिए हमारा समर्थन अटूट है।'

उन्होंने कहा, 'पूरे अमेरिका में बड़ी संख्या में तिब्बती-अमेरिकी और तिब्बत के मित्र रोज इस बात को लेकर काम कर रहे हैं कि आपके बेहतर भविष्य का सपना जीवित रहे, सुनिश्चित हो। हम में से हर एक चीनी शासन के तहत तिब्बतियों के खिलाफ बढ़ते दमन से बेहद चिंतित है। हम जानते हैं कि बीजिंग अपने सरकारी आवासीय स्कूलों के जरिए तिब्बती बच्चों को उनके परिवारों से अलग कर रहा है। हालांकि बच्चों की देखभाल का अधिकार हमसे पहले होना चाहिए। हम जानते हैं कि बीजिंग आर्थिक विकास का बहाना बनाकर पूरे के पूरे समुदायों को जबरन विस्थापित कर रहा है। साथ ही, सैकड़ों तिब्बती कार्यकर्ताओं, लेखकों, कलाकारों, शिक्षकों और भिक्षुओं को महज इसलिए निशाना बनाकर कैद कर रहा है क्योंकि वे अपनी मौलिक स्वतंत्रता के अधिकार का उपयोग करना चाहते हैं। हम जानते हैं कि वह तिब्बती बौद्ध धर्म को अपने ढंग से निर्धारित करने और नियंत्रित करने की कोशिश कर रहा है। दूसरी ओर चीन तिब्बती स्वायत्त क्षेत्र और अन्य तिब्बती इलाकों में धर्म की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध लगा रहा है।'

प्रतिनिधि ने अपने संबोधन का समापन करते हुए कहा, 'यही समय है कि बीजिंग परम पावन और उनके प्रतिनिधि के साथ बिना किसी पूर्व शर्त के फिर से वार्ता शुरू करे ताकि बातचीत के जरिए ऐसा समाधान निकाला जा सके जो तिब्बती लोगों को सार्थक स्वायत्तता की ओर ले जाए। इसीलिए मुझे प्रतिनिधि मैकगवर्न, चेयरमैन मैककॉल और विदेश विभाग के साथ काम करने पर बहुत गर्व है। इन मुद्दों पर काम करते हुए हमने तिब्बत-चीन विवाद अधिनियम के प्रस्ताव को बढ़ावा दिया और पारित किया। खुशी की बात है कि अमेरिकी कांग्रेस के दोनों सदनों ने पिछले सप्ताह दोनों दलों की सर्वसम्मति से इसे पारित कर दिया है।

प्रतिनिधि जिम मैकगवर्न ने समारोह को संबोधित करते हुए स्पीकर एमेरिटा नैन्सी पेलोसी के साथ २०१५ में तिब्बत की अपनी यात्रा को याद किया। उन्होंने तिब्बत यात्रा के दौरान वहां देखे गए चीनी सरकार के दमन को याद करते हुए कहा, 'यहां और दुनिया भर के निर्वासित समुदायों में रहने वाले तिब्बती बच्चे और पीआरसी के दमन के तहत रहने वाले तिब्बती बच्चे मुझे बहुत उम्मीद देते हैं, क्योंकि वे तिब्बत का भविष्य हैं। लेकिन दूसरी चीज जो मुझे उम्मीद बंधाती है, वह यह देखना है कि धर्मशाला में और व्यापक तिब्बती समुदाय में लोकतंत्र जीवित है और अच्छी तरह से फल-फूल रहा है। प्रतिनिधि जिम मैकगवर्न ने कहा, 'हमने सिक्योंग और केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के कई अधिकारियों से मुलाकात की और चीन के नेतृत्व की इच्छा के विपरीत जाकर सिक्योंग को चुना गया। दुनिया भर के देशों में फैले पूरे तिब्बती निर्वासित समुदाय के लोग अपने नेता को चुनने में भाग लेते हैं। यह चीन में रहने वालों के लिए एक उदाहरण है, एक प्रतीक है कि एक अलग भविष्य कैसा हो सकता है।' उन्होंने आगे कहा, 'आज यहां हमारी उपस्थिति भी एक प्रतीक स्वरूप ही है। यह चीनी नेताओं के लिए एक संकेत है कि अमेरिका तिब्बती लोगों के प्रति अपने समर्थन से कभी भी डगमगाएगा नहीं। जैसा कि आपने सुना है, पिछले हफ्ते ही कांग्रेस ने मेरे और चेयरमैन मैककॉल द्वारा लिखित और हमारे प्रतिनिधिमंडल के हर एक सदस्य द्वारा समर्थित एक प्रमुख द्विदलीय विधेयक पारित किया है। यह तिब्बती आत्मनिर्णय के लिए अमेरिका के समर्थन की पुष्टि करने और तिब्बत के बारे में झूठी सूचनाओं का मुकाबला करने के लिए अमेरिकी विदेश विभाग की पहल थी जो आज की परिस्थिति में जरूरी था। पीआरसी लगातार इस झूठ को प्रचारित करता रहता है कि तिब्बत प्राचीन काल से चीन का हिस्सा रहा है। यह हास्यास्पद है। यह ऐतिहासिक रूप से गलत है और हमें रिकॉर्ड को सही करना चाहिए।' इसके अलावा, प्रतिनिधि जिम मैकगवर्न ने परम पवित्र ११वें पंचेन लामा के जबरन गायब होने और तिब्बत के धार्मिक मामलों में सीसीपी के हस्तक्षेप को लेकर एक बयान दिया, जिसमें परम पावन दलाई लामा के उत्तराधिकारी का चयन भी शामिल है।

अमेरिकी कांग्रेस के निचले सदन प्रतिनिधि सभा के सदस्य मैरिएनेट मिलर-मीक्स ने अपने संबोधन में कहा, 'जब मैं छोटी बच्ची थी, तब मेरी मां मुझसे कहा करती थी कि आस्था हवा की तरह है। तुम इसे देख नहीं सकती। तुम इसे छू नहीं सकती। लेकिन यह हमेशा तुम्हारे ही आसपास होती है, और यह तुमको ऊपर उठाती है। आज अनुभव हुआ कि दलाई लामा ने हमें ऊपर उठाया। हम स्कूली बच्चों को तिब्बती संस्कृति और परंपरा की याद दिलाने के लिए उनको धन्यवाद देते हैं।' उन्होंने कहा कि यह पीढ़ी लड़ने के योग्य पीढ़ी है। आपका संघर्ष हमारा संघर्ष है।

हम परम पावन और आप तिब्बतियों को धर्मशाला में अस्थायी शरण देने के लिए भारत को धन्यवाद देते हैं। हालांकि हम यह स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि यह शरण अस्थायी होगा। जैसा कि दलाई लामा ने कहा, आस्था से उम्मीद आती है। उम्मीद से साहस आता है। साहस से आंतरिक शक्ति और शांति आती है। उन्होंने कहा कि यही उम्मीद और साहस की बात है कि तिब्बती आखिरकार निर्वासन में नहीं रहेंगे।

प्रतिनिधि मैरिएनेट मिलर-मीक्स के बाद प्रतिनिधि सभा के भारतीय-अमेरिकी सदस्य अमी बेरा ने कहा कि आज जब हम परम पावन से मिले तो उन्होंने हमें और खासकर मुझे यह याद दिलाया कि भारत के लोगों और तिब्बत के लोगों के बीच एक हजार साल से अधिक का संपर्क है। तिब्बती बौद्ध धर्म के साथ भी भारत का एक हज़ार साल पहले का आध्यात्मिक संबंध है।'

प्रतिनिधि ने आश्वासन देते हुए कहा, 'मुझे वह याद आ गया। और आज जब मैं इस श्रोतावर्ग की ओर देखता हूं, तो मैं अपने भाइयों और बहनों, अपने आध्यात्मिक भाइयों और बहनों को देखता हूं। हम आध्यात्मिक रूप से एक ही वंशवृक्ष की शाखाएं हैं। इसलिए मेरे प्यारे भाइयों और बहनों, आप यह जान लें कि आपका एक अपना भाई अमेरिकी कांग्रेस में आपके अधिकारों के लिए, आपकी स्वतंत्रता के लिए और आपके भविष्य के लिए लड़ रहा है। हम इसमें साथ- साथ हैं। और जैसा कि परम पावन ने कहा, हम जीतेंगे क्योंकि यह करुणा के लिए संघर्ष है।'

न्यूयॉर्क शहर के स्टेटन द्वीप जिले से आनेवाले प्रतिनिधि सभा के सदस्य निकोल मैलियोटाकिस ने कहा, '(स्टेटन द्वीप) पर जैक्स मार्क्विस तिब्बती संग्रहालय अवस्थित है, जिसका परम पावन ने १९९५ में दौरा किया था। उनके अतिरिक्त सरकार में आपका प्रतिनिधित्व करने वाले कई सदस्य भी इसका दौरा कर चुके हैं। जब परम पावन १९९५ में वहां गए, तो उन्होंने कहा कि यह तिब्बत के सबसे करीब है जो आप पश्चिम में पा सकते हैं। और मुझे उस खूबसूरत सांस्कृतिक रत्न का प्रतिनिधित्व करने पर बहुत गर्व है।मुझे उस खूबसूरत सांस्कृतिक रत्न का प्रतिनिधित्व करने पर बहुत गर्व है। जब हमें आज परम पावन के दर्शन का सौभागय प्राप्त हुआ तो मैंने उन्हें बताया कि जब वे १९५९ में तिब्बत से पलायन कर आए थे, उसी समय १९५९ में ही मेरी मां भी क्यूबा की अपनी मातृभूमि से साम्यवाद से बचने के लिए भागी थीं। और इसलिए हमारे बीच कई समानताएं हैं। मेरे मन में उन लोगों के लिए बहुत दया और सहानुभूति है जो अपने वतन लौटना चाहते हैं और अपने उन बच्चों और पोते-पोतियों को देखना चाहते हैं, जो कभी तिब्बत नहीं गए और आज यहां हैं।

प्रतिनिधि निकोल ने भाषण को समाप्त करते हुए कहा, 'हम मानते हैं कि दुनिया का हर व्यक्ति उस जगह पर रहने का हकदार है जहां उन्हें जीवन, स्वतंत्रता और खुशी मिलती है। इस अधिकार तिब्बत के ६० लाख से अधिक लोगों के पास भी है। संयुक्त राज्य अमेरिका में हम इस बात को गर्व से कहते हैं।'

अंत में तिब्बत में मानवाधिकारों की वकालत करने वाली और लंबे समय से तिब्बत की समर्थक और मित्र स्पीकर एमेरिटा नैन्सी पेलोसी ने तिब्बत की अपनी यात्रा को विस्तार से याद किया, जिसका प्रतिनिधि जिम मैकगवर्न ने भी पहले उल्लेख किया था। उन्होंने पहले चीनी सरकार के विभिन्न तरीकों से तिब्बत की विशिष्ट पहचान को मिटाने के व्यवस्थित प्रयासों के बारे में बात की थी, जिसमें हान मूल की आबादी को बड़ी संख्या में तिब्बत में बसाना भी शामिल है। उन्होंने कहा, 'मुझे नहीं पता कि वे (हान चीनी आबादी) इससे बाखबर हैं। लेकिन हम जानते हैं कि चीनी सरकार इससे पूरे से वाकिफ है और हमें यह भी करना है कि उन्हें संदेश मिलना चाहिए। इस विधेयक के पारित होने से उन्हें यह संदेश मिल भी गया है।'

उन्होंने आगे कहा, 'यह विधेयक प्रतिनिधि सभा और सीनेट से पारित हुआ है और जल्द ही संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति जो बिडेन द्वारा भी इस पर हस्ताक्षर किए जाएंगे। सभी ने बच्चों के बारे में बात की है, और इन खूबसूरत बच्चों को कला, तिब्बती कला का प्रदर्शन करते देखना ही वास्तव में हमारा मिशन है। हमारा उद्देश्य उनके लिए भविष्य को बेहतर बनाना है। जब हम तिब्बत में देखते हैं कि वे उन्हें चीनी औपनिवेशिक स्कूलों में भेजने की कोशिश कर रहे हैं, उन्हें चीनी तरीके से शिक्षित कर रहे हैं, तिब्बती भाषा के उनके ज्ञान को कम कर रहे हैं, उनके और उनके परिवारों के हर काम पर निगरानी रख रहे हैं जो उनकी गरिमा और मूल्य का सम्मान नहीं करता है। हम ऐसा बिल्कुल नहीं होने दे सकते।'

स्पीकर एमेरिटा ने 'रिज़ॉल्व तिब्बत बिल' के पक्ष में खड़े होने और अभियान चलाने में योगदान के लिए रिचर्ड गेरे को भी श्रेय दिया। उन्होंने कहा, 'तिब्बत का बाहरी दुनिया में, सरकार के बाहर रिचर्ड गेरे से बेहतर कोई दोस्त नहीं है।'

स्पीकर एमेरिटा नैन्सी पेलोसी ने यह भी उम्मीद जताई कि परम पावन दलाई लामा लंबे समय तक जीवित रहेंगे। उन्होंने कहा, ज्ञान और परंपरा तथा करुणा और आत्मा और प्रेम की पवित्रता के अपने संदेश के साथ वह लंबे समय तक जीवित रहेंगे, और उनकी विरासत हमेशा जीवित रहेगी।' प्रतिनिधि सभा की पूर्व स्पीकर ने कहा, 'लेकिन चीन के राष्ट्रपति, आप चले जाएंगे और कोई भी आपको किसी भी चीज को याद नहीं करेगा।'

कार्यक्रम के समापन से पहले सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने दुनिया भर के विभिन्न मीडिया घरानों और समाचार एजेंसियों से बड़ी संख्या में आए पत्रकारों की उपस्थिति का लाभ उठाया और छह दशकों से अधिक समय तक तिब्बतियों की मेजबानी और समर्थन करने के लिए भारत सरकार और भारत के लोगों के प्रति अपनी प्रशंसा और आभार व्यक्त किया।

◆ शिक्षा कलोन ने एसईई लर्निंग कार्यशाला के समापन समारोह में सामाजिक प्रगति में नैतिकता की भूमिका पर प्रकाश डाला

०३ जून, २०२४

धर्मशाला। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) के शिक्षा विभाग की कलोन (मंत्री) थरलम डोल्मा चांगरा ने ०२ जून २०२४ को तिब्बती स्कूल एसईईएल कार्यक्रम में भाग लेनेवालों के विशेष प्रशिक्षण के लिए एसईई लर्निंग (एसईईएल) और संज्ञानात्मक आधारित करुणा प्रशिक्षण (सीबीसीटी) पर पांच दिवसीय कार्यशाला के समापन समारोह को मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित किया।

शिक्षा कलोन ने अपने मुख्य भाषण में कहा, 'हमने देखा है कि एक नैतिक समाज में अशिक्षित लोग सामाजिक मुद्दों को नहीं उठा पाते हैं। हालांकि, पूरी तरह से शिक्षित होने के बाद भी कोई नैतिक आचार नहीं रखने वाले लोग भी ऐसा करते हैं। चूंकि खुद में नैतिकवान होना महत्वपूर्ण है, इसलिए शिक्षा विभाग ने स्कूलों में एसईई लर्निंग की धारणा को आगे बढ़ाया है और शिक्षकों और प्रधानाचार्यों को प्रशिक्षण की शृंखला प्रदान की है।' कलोन ने कार्यशाला के प्रशिक्षकों की बड़ी प्रशंसा की और प्रतिभागियों को कार्यशाला से सीखी गई बातों को अपने-अपने स्कूलों में आचरण में लाने के लिए प्रोत्साहित किया। कलोन ने कहा, 'शिक्षा विभाग का प्राथमिक उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि सभी तिब्बती स्कूली छात्रों को मानकीकृत शिक्षा और नैतिक आचरण प्रदान की जाए। यह सर्वविदित है कि आज के समाज में समस्याओं का मुख्य कारण नैतिकता की कमी है।'

कार्यशाला के समापन समारोह में शिक्षा कलोन के अलावा एमोरी विश्वविद्यालय से कार्यकारी निदेशक प्रो. लोबसांग तेनजिन नेगी और एसईई लर्निंग के सहायक निदेशक और कार्यक्रम के प्रायोजक त्सोंडु सम्फेल उपस्थित रहे। शिक्षा विभाग के शिक्षा परिषद के अतिरिक्त सचिव तेनजिन पेमा भी विभिन्न तिब्बती स्कूलों के ३८ प्रतिभागियों के साथ कार्यक्रम में उपस्थित थे।

कार्यशाला का पूरा वित्तीय खर्च दानिडा द्वारा वहन किया गया था।

- सीटीए के शिक्षा विभाग की रिपोर्ट

◆ यूरोपीय संघ ने ३९वें यूरोपीय संघ-चीन मानवाधिकार वार्ता में परम पावन दलाई लामा के उत्तराधिकार में चीन के हस्तक्षेप का विरोध किया

१८ जून, २०२४

यूरोपीय संघ और चीन के बीच चोंगकिंग में आयोजित मानवाधिकार वार्ता में यूरोपीय संघ ने इस बात पर जोर दिया कि धार्मिक हस्तियों के उत्तराधिकारी का चयन बिना किसी सरकारी हस्तक्षेप के और धार्मिक रीति-रिवाजों के अनुरूप होना चाहिए। इसमें दलाई लामा के उत्तराधिकारी के चयन का मामला भी शामिल है।

इसके अलावा यूरोपीय संघ ने चीन और विशेष रूप से चीन द्वारा शासित तिब्बती क्षेत्रों में मानवाधिकारों की अति गंभीर स्थिति के बारे में अपनी चिंताओं को दोहराया।

यूरोपीय संघ ने मूल स्वतंत्रता, श्रम अधिकारों और जबरन श्रम कराने, उचित प्रक्रिया अधिकारों की सीमाओं और चीन में न्यायिक स्वतंत्रता पर प्रतिबंध को लेकर लगातार चिंता जताई। ईयू ने विचार-अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, सभा, धर्म या विश्वास के साथ-साथ समानता के अधिकार और महिलाओं और एलजीबीटीआई के अधिकारों सहित भेदभाव से मुक्ति के मुद्दों को भी उठाया।

परंपरा के अनुरूप ईयू ने गो शेरब ग्यात्सो और ताशी दोरजे सहित अनेक कार्यकर्ताओं, लेखकों और धार्मिक हस्तियों के व्यक्तिगत मामलों को उठाया और चीन से उनकी तत्काल रिहाई का आह्वान किया।

मानवाधिकार वार्ता से पहले, यूरोपीय संघ के प्रतिनिधिमंडल ने न्यिंगची और ल्हासा में स्थानों का अवलोकन किया। केंद्रीय और स्थानीय स्तर के चीनी अधिकारियों द्वारा कराए गए संक्षिप्त और सघन दौरा कार्यक्रम में अधिकारियों ने अपने- अपने स्तर पर बोर्डिंग स्कूलों, नगर पालिकाओं, सांस्कृतिक और धार्मिक स्थलों, पुनर्वासित तिब्बती परिवारों के अलावा एक जेल का दौरा भी कराया। हालांकि, इस यात्रा में कैदियों के साथ व्यक्तिगत मुलाकातों को छोड़कर यूरोपीय संघ के अधिकांश अनुरोधों को नहीं माना गया। इस यात्रा के दौरान प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र की जमीनी हकीकत और वहां के लोगों द्वारा सामना की जा रही चुनौतियों की निश्चित समझ हासिल करने का प्रयास किया।

इस यात्रा के बाद यूरोपीय संघ ने तिब्बती लोगों की पूर्ण द्विभाषी शिक्षा, सांस्कृतिक विरासत, पहचान और मौलिक स्वतंत्रता के संरक्षण को सुनिश्चित करने के लिए कई सिफारिशें पेश कीं। यूरोपीय संघ अंतरराष्ट्रीय समुदाय और नागरिक समाज संगठनों को वहां की और अधिक यात्रा करने के लिए प्रोत्साहित करेगा।

परम पावन दलाई लामा के प्रतिनिधि रिग्जिन जेनखांग ने कहा, 'यूरोपीय संघ के प्रतिनिधिमंडल द्वारा तिब्बत की यह दुर्लभ यात्रा चीन को कड़ा संदेश देती है कि यूरोपीय संघ तिब्बत में चीन द्वारा किए जा रहे मानवाधिकारों के उल्लंघन और तिब्बती भाषा, संस्कृति और धर्म पर निरंतर हमले से बेहद चिंतित है।'

मानवाधिकार वार्ता की सह-अध्यक्षता यूरोपियन एक्टर्नल एक्शन सर्विस में एशिया- प्रशांत क्षेत्र के उप प्रबंध निदेशक पाओला पम्पालोनी और चीनी विदेश मंत्रालय में नियुक्त अंतरराष्ट्रीय संगठनों और सम्मेलनों के लिए महानिदेशक शेन बो ने की। यूरोपीय संघ के सदस्य देशों ने चोंगकिंग वार्ता में पर्यवेक्षकों के तौर पर हिस्सा लिया।

◆ यूरोपीय संसद के १०० से अधिक उम्मीदवारों ने तिब्बत का समर्थन करने की प्रतिज्ञा की

१२ जून, २०२४

ब्रसेल्स। यूरोपीय संघ की संसद का चुनाव ६-९ जून को होनेवाला है। चुनाव से पहले ९ अप्रैल २०२४ को यूरोपीय संसद में 'तिब्बत के समर्थन में यूरोप (यूरोप फॉर तिब्बत)' अभियान चलाया गया। यह अभियान अब समाप्त हो गया है, क्योंकि १०० से अधिक उम्मीदवारों ने यूरोपीय संसद के लिए निर्वाचित होने पर तिब्बत का समर्थन करने के लिए से प्रतिज्ञा- पत्र पर दस्तखत किए हैं। इस तरह तिब्बत के लिए यूरोपीय संघ की संसद के सदस्यों से समर्थन प्राप्त करने का लक्ष्य पूरा हो गया है। यूरोपीय संघ के १६ सदस्य देशों के कुल ११५ उम्मीदवारों ने तिब्बती लोगों की मौलिक स्वतंत्रता की रक्षा करने की प्रतिबद्धता जताई है। इसके अलावा कई राजनीतिक दलों ने तिब्बत से संबंधित कई मुद्दों पर अपना पक्ष रखते हुए प्रश्नावली का जवाब दिया है।

ब्रसेल्स स्थित तिब्बत कार्यालय के प्रतिनिधि रिग्जिन जेनखांग ने कहा, 'यह महत्वपूर्ण है कि नई संसद तिब्बत में तिब्बतियों के मौलिक अधिकारों पर चीन के लगातार हमलों के मद्देनजर, तिब्बती लोगों के अहिंसक स्वतंत्रता संघर्ष के लिए अपने समर्थन की न केवल पुष्टि करे बल्कि उसे दोगुना करे। यह काम तिब्बत इंटरग्रुप की फिर से स्थापित करने को प्राथमिकता देकर किया जा सकता है। इससे यह सुनिश्चित हो जाएगा कि तिब्बत यूरोपीय संसद के लिए प्राथमिकता पर है।' प्रतिनिधि ने अभियान की सफलता का श्रेय अंतरराष्ट्रीय तिब्बत समर्थक समूहों, वी-टैग सदस्यों, एसएफटी और यूरोप में तिब्बती समुदायों की सक्रिय भागीदारी को दिया। इन संगठनों यूरोपीय संसद के चुनाव में भाग लेने वाले उम्मीदवारों को तिब्बत के लिए अपना समर्थन देने के लिए प्रभावी रूप से संगठित किया। इसके परिणामस्वरूप केवल दो महीने के समय में बड़ी संख्या में प्रतिज्ञा-पत्र एकत्र कर लिया गया। अब इससे आगे यह सुनिश्चित करना जरूरी होगा वे समर्थन की अपनी प्रतिज्ञाओं का पालन करें। इसके लिए नव निर्वाचित सांसदों के साथ आगे संपर्क बनाकर रहना महत्वपूर्ण होगा। संयुक्त ऑनलाइन अभियान ब्रुसेल्स स्थित तिब्बत कार्यालय, यूरोपीय संसद में तिब्बत हित समूह और तिब्बत के लिए अंतरराष्ट्रीय अभियान (आईसीटी) के नेतृत्व में लंदन, जिनेवा और आईटीएन में तिब्बत कार्यालयों के सहयोग से चलाया गया। इस बारे में अधिक जानकारी www.EU4Tibet.org से प्राप्त किया जा सकता है।

◆ तिब्बत समाधान विधेयक के लिए अमेरिकी प्रतिनिधि सभा में निलंबन प्रस्ताव पारित, अब राष्ट्रपति के पास जाएगा

१२ जून, २०२४

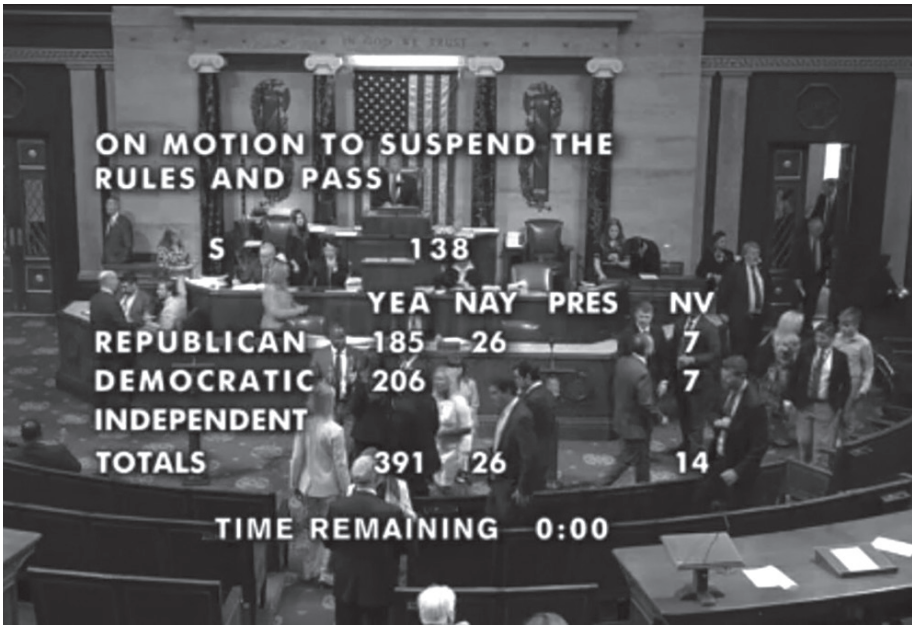

धर्मशाला। रिजॉल्व तिब्बत बिल (तिब्बत समाधान विधेयक) कानून बनने की ओर अग्रसर है। अमेरिकी कांग्रेस की प्रतिनिधि सभा ने बुधवार, १२ जून को सीनेट से पारित विधेयक पर निलंबन प्रस्ताव पारित कर दिया। यह विधेयक एक दिन पहले ही सदन में पेश किया गया था। बुधवार की सुबह सदन ने २६ के मुकाबले ३९१ मतों से संशोधित कानून को मंजूरी दे दी।

अब यह विधेयक अंतिम मंजूरी के लिए राष्ट्रपति बिडेन के कार्यालय में जाएगा।

प्रोमोटिंग ए रिजोल्यूशन टू द तिब्बत-चाइना कंफ्लिक्ट ऐक्ट (तिब्बत-चीन संघर्ष के समाधान को बढ़ावा देने वाला अधिनियम) शीर्षक बिल का नंबर एस.१३८ है। अमेरिका के दोनों दलों के समर्थन वाला यह विधेयक सीनेट में एचआर. ५३३ नंबर से था। इसे सदन ने १५ फरवरी को भारी बहुमत से पारित किया था। इसके बाद विधेयक को सीनेट के पास भेजा गया, जहां इस पर एस.१३८ के रूप में एक पैराग्राफ का संशोधन किया गया और २३ मई को इसे सर्वसम्मति से पारित किया गया। इसके बाद सीनेट द्वारा संशोधित विधेयक विचार के लिए सदन में लौट आया।

११ जून को विधेयक को मैसाच्यूसेट्स के डेमोक्रेट प्रतिनिधि जिम मैकगवर्न और टेक्सास से रिपब्लिकन प्रतिनिधि माइकल मैककॉल ने पेश किया और प्रतिनिधि बिल कीटिंग के साथ सदन के सदस्यों से विधेयक के पक्ष में मतदान करने का आग्रह किया। कीटिंग ने भी विधेयक का पुरजोर समर्थन किया।

प्रतिनिधि माइकल मैककॉल ने कहा, 'संयुक्त राज्य अमेरिका ने कभी यह स्वीकार नहीं किया कि तिब्बत प्राचीन काल से चीन का हिस्सा था जैसा कि चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (सीसीपी) झूठा दावा करती है। यह कानून अमेरिकी नीति को स्पष्ट करता है और तिब्बती लोगों की अनूठी भाषा, धर्म और संस्कृति पर प्रकाश डालता है। इसके साथ ही अमेरिकी नीति हैकि किसी भी प्रस्ताव में तिब्बती लोगों की इच्छाओं और आवाज को शामिल किया जाना चाहिए। इस विधेयक को पारित करना अमेरिका के इस संकल्प को दर्शाता है कि तिब्बत में सीसीपी की यथास्थिति स्वीकार्य नहीं है और मैं दलाई लामा और तिब्बत के लोगों के लिए इससे बड़ा कोई संदेश या उपहार नहीं सोच सकता कि इस विधेयक को जल्द से जल्द राष्ट्रपति के टेबल पर पहुंचा दिया जाए ताकि तिब्बत के लोगों को अपने भविष्य की कमान संभालने में मदद मिल सके।'

प्रतिनिधि बिल कीटिंग ने कहा, 'बहुत लंबे समय से चीनी शासन ने तिब्बती लोगों पर अत्याचार किया है और तिब्बत के भविष्य के बारे में दलाई लामा और उनके प्रतिनिधियों के साथ सार्थक बातचीत करने की अपनी प्रतिबद्धता को बनाए रखने में विफल रहा है। यह (विधेयक) बीजिंग की दमनकारी रणनीति और भ्रामक दुष्प्रचार की निंदा करता है। यह विधेयक तिब्बती मुद्दों के लिए हमारे अटूट समर्थन को मजबूत करता है और पीआरसी से तिब्बती प्रतिनिधियों के साथ वास्तविक बातचीत में शामिल होने का आह्वान करता है। यह तिब्बत के बारे में पीआरसी के भ्रामक दुष्प्रचारों का मुकाबला करने के लिए हमारे सार्वजनिक कूटनीति प्रयासों के तहत २००२ के तिब्बती नीति अधिनियम को भी मजबूत करता है।

संघर्षों के मूल में लोगों के मानवाधिकारों का व्यवस्थित रूप से हनन होता है। तिब्बत और चीन के बीच दशकों पुराना विवाद आक्रमण, प्रतिरोध और विद्रोह के सशस्त्र संघर्ष के रूप में शुरू हुआ। लंबे समय तक की यह हिंसा रोकने का एकमात्र तरीका यह है के पीआरसी तिब्बती लोगों के मानवाधिकारों और उनकी प्रतिष्ठा को स्वीकार करे। इस विधेयक के समर्थन में मतदान, तिब्बती लोगों के अधिकारों को मान्यता देने के लिए मतदान है और यह तिब्बत और पीपुल्स रिपब्लिक

ऑफ चाइना के बीच विवाद को अंतरराष्ट्रीय कानून के अनुसार बातचीत और बिना किसी पूर्व शर्त के शांतिपूर्ण तरीके से हल करने पर जोर देने के लिए है।'

विधेयक के लेखक प्रतिनिधि जिम मैकगवर्न ने कहा, 'दुनिया संघर्षों में डूबी हुई है। कई संघर्षों का मूल कारण लोगों के मानवाधिकारों का सुनियोजित रूप से हनन होता है। तिब्बत और चीन के बीच भी दशकों पुराना विवाद आक्रमण, प्रतिरोध और उग्रवाद के सशस्त्र संघर्ष के रूप में शुरू हुआ। इस विधेयक के लिए मतदान तिब्बती लोगों के अधिकारों को मान्यता देने के लिए मतदान है और यह तिब्बत और पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना के बीच विवाद को अंतरराष्ट्रीय कानून के अनुसार बातचीत के माध्यम से और बिना किसी पूर्व शर्त के शांतिपूर्ण ढंग से हल करने पर जोर देने के लिए है।'

◆ तिब्बत के आत्मनिर्णय के अधिकार समर्थक प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित करने पर सीटीए ने कनाडा के हाउस ऑफ कॉमन्स का स्वागत किया

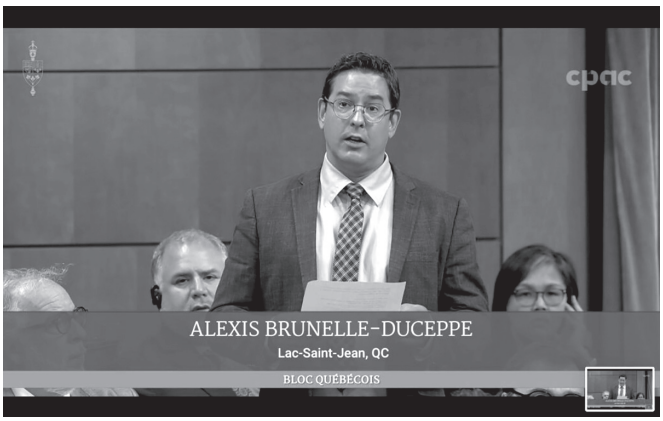

११ जून, २०२४

धर्मशाला। कनाडा के हाउस ऑफ कॉमन ने १० जून २०२४ को सर्वसम्मति से तिब्बत के आत्मनिर्णय के अधिकार का समर्थन करने वाले एक प्रस्ताव को पारित कर दिया, जिसमें जोर दिया गया कि आत्मनिर्णय एक व्यक्ति और एक राष्ट्र के रूप में तिब्बतियों का मौलिक अधिकार है। प्रस्ताव में तिब्बतियों की संस्कृति का चीन द्वारा सुनियोजित रूप से अपनी संस्कृति में जबरन विलय की कोशिशों की आलोचना की गई और परम पावन १४वें दलाई लामा के पुनर्जन्म के चयन सहित अपनी आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक नीतियों को बाहरी शक्तियों के हस्तक्षेप के बिना स्वतंत्र रूप से चुनने के तिब्बती लोगों के अधिकारों की पुष्टि की गई।

प्रस्ताव को ब्लॉक क्यूबेकॉइस द्वारा प्रायोजित किया गया था और ब्लॉक क्यूबेकॉइस, लेक सेंट-जीन, क्यूबेक के सदस्य सांसद एलेक्सिस ब्रुनेल-डुसेप द्वारा सदन में पेश किया गया था।

तिब्बती राष्ट्रपति सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने अपने आधिकारिक एक्स (जिसे पहले ट्विटर कहा जाता था) प्लेटफॉर्म पर पोस्ट किया, 'तिब्बती आत्मनिर्णय की पुष्टि करने वाले प्रस्ताव को कनाडाई संसद द्वारा सर्वसम्मति से पारित करना तिब्बत में तिब्बतियों को एक मजबूत संदेश देता है कि उनकी लचीलापन की नीति को भुलाया नहीं गया है। सांसद एलेक्सिस ब्रुनेल-डुसेप को इसके नेतृत्व के लिए और सभी राजनीतिक दलों को उनके समर्थन के लिए धन्यवाद।
प्रस्ताव न केवल अंतरराष्ट्रीय समुदाय में तिब्बत के लिए बढ़ते समर्थन को रेखांकित करता है, बल्कि तिब्बत में चीन के चल रहे संस्थागत सांस्कृतिक विलय और परम पावन दलाई लामा के पुनर्जन्म के चयन में हस्तक्षेप के खिलाफ महत्वपूर्ण प्रतिरोध का संदेश भी देता है।'

अप्रैल में उत्तरी अमेरिका की अपनी तीन सप्ताह की आधिकारिक यात्रा के दौरान सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने ब्लॉक क्यूबेकॉइस के नेता यवेस-फ्रांकोइस ब्लैंचेट और सांसद एलेक्सिस ब्रुनेल-डुसेप के साथ चर्चा की। इस चर्चा में तिब्बत-चीन संघर्ष और तिब्बती समुदाय द्वारा अपनी सांस्कृतिक विरासत की रक्षा के प्रयासों से संबंधित मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया गया। यह उल्लेखनीय उपलब्धि सिक्योंग पेन्पा शेरिंग, प्रतिनिधि डॉ. नामग्याल चोएड्रुप और कनाडा-तिब्बत समिति द्वारा मॉन्ट्रियल, ओटावा और वाशिंगटन डीसी में ब्लॉक क्यूबेकॉइस के नेताओं के साथ कई बैठकों के बाद मिली है।

प्रस्ताव का मूल पाठ
प्रस्ताव का सदन द्वारा पारित मूल पाठ इस प्रकार है:-

यह सदन प्रस्ताव पारित करता है कि

- चीन तिब्बतियों के संस्थागत सांस्कृतिक विलय की नीति अपना रहा है

- तिब्बती, एक व्यक्ति और एक राष्ट्र के रूप में, आत्मनिर्णय के अधिकार का दावा कर सकते हैं

- इस प्रकार, उन्हें किसी भी बाहरी शक्ति के हस्तक्षेप के बिना अपनी आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक नीतियों को स्वतंत्र रूप से चुनने का अधिकार है

- यह अधिकार चीन को अगले तिब्बती आध्यात्मिक धर्मगुरु परम पावन १४वें दलाई लामा के उत्तराधिकारी के चयन में हस्तक्षेप करने से रोकता है।

IMPORTANT NOTICE

Dear Readers,

Firstly, I would like to express my heartfelt appreciation for the overwhelming response and support that we have received from you since the launch of Tibbat Desh Magazine.
Tibbat Desh Magazine is the only monthly Hindi Magazine on current affairs of Tibet which includes news on teachings of His Holiness the Dalai Lama, Current grave situations inside Tibet, Events & activities in Exile and of the Tibetan Freedom movement across the globe.
You must be aware, for the past 2 years, we have been receiving complaints about delay and not obtaining the Tibbat Desh magazine on time to our readers. And also we found that many of our readers either have shifted or changed their existing postal address. Therefore to review the mailing address, we request you to assist us in providing the current postal address at the below mentioned address or email.
We would also request our readers to send their feedbacks and suggestions about the magazine.

Yours Sincerely,

Tashi Dekyi
Acting Coordinator
India Tibet Coordination Office

आवश्यक सूचना

प्रिय पाठकों,

सबसे पहले में, आप सभी का बहुत अभार व्यक्त करता हूं कि जब से तिब्बत देश मासिक पत्रिका का विमोचन हुआ आप लोगों का निरंतर समर्थन एवं शानदर भागीदारी रहा है।
तिब्बत देश, तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका है, जो तिब्बत के भीतर हो रहे चीनी दमनकारी और क्रूर नीति तथा विश्व स्तर पर परमपावन दलाई लामा के मार्गदर्शन में तिब्बती आंदोलन के बारे में भारत के सरकार और लोगों में समर्थन एवं जानकारी उपलब्ध कराना है।
आप सभी को ज्ञात है कि, पिछले दो वर्षों से, हमारे पठकों का बहुत सारे शिकायतों हमारे इस कार्यलय में प्राप्त हुआ, जिनमें कई का यह कहना था कि उनको तिब्बत देश मिल नही रहा है। साथ ही हमें यह भी जानकारी मिली है कि बहुत सारे पठकों का पता एवं आवास बदल गया है या वहां से रवाना हो चुका है।
इसलिए हम इस पत्रिका का इस बार समीक्षा कर रहे है। और आप सभी से यह निवेदन करता हूं कि अगर आपको तिब्बत देश पत्रिका प्राप्त हो रहे है तो उसकी पुष्टी हमे तुरन्त देने की कष्ट करें। आप इसकी पुष्टी हमारे नीछे लिखे गये पता या ई–मेल पर भेज सकते है।
अतः तिब्बत देश पत्रिका के संदर्भ में अपना राय एवं सुझाव हमे समय समय पर भेजने की कष्ट करें।

सादर आपका

ताशी देकि
कार्यवाहक समन्वयक, भारत तिब्बत समन्वय केंद्र
नई दिल्ली

कार्यलय पताः भारत तिब्बत समन्वय केंद्र, एच–10, द्वितीय मंजील, लाजपत नगर–03, नई दिल्ली–110024
फोनः 011–29830578
ई–मेलः coordinator@indiatibet.net

June, 2024, Years: 45 Issue: 06 Regd No. : RNI 34636-79

यूरोपीय संसद के लिए १०० से अधिक उम्मीदवारों ने तिब्बत का समर्थन करने की प्रतिज्ञा की।

नेशनल एंडोमेंट फॉर डेमोक्रेसी की ओर से सिक्योंग पेन्पा शेरिंग को लोकतंत्र सेवा पदक प्रदान करते हुए प्रतिनिधि जोआक्विन कास्त्रो।

तिब्बती संसद के प्रवेश द्वार पर अमेरिका से आए उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों के साथ तिब्बती सांसदगण, सिक्योंग पेन्पा शेरिंग और सुरक्षा कलोन डोल्मा ग्यारी। फोटो / तेनज़िन फेंडे / सीटीए।

- शुगलागखांग मंदिर के प्रार्थना सेवा में भाग ले रहे विभिन्न धर्मों के स्थानीय प्रमुख।